UGC Approved Journal No. 49321 (Old) Impact Factor : 7.0 ISSN : 0976-6650

Shodh Drishti

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Vol. 15, No. 8 Year - 15 August, 2024

PEER REVIEWED JOURNAL

Editor in Chief
Prof. Abhijeet Singh

Editor
Dr. K.V. Ramana Murthy
Principal
Vijayanagar College of Commerce
Hyderabad

Dr. Anil Kumar
Assistant Professor, Department of History
Rajdhani College, University of Delhi

Published by
SRIJAN SAMITI PUBLICATION
VARANASI
E-mail : shodhdrishtivns@gmail.com, Website : shodhdrishti.com, Mob. 9415388337

Scanned with OKEN Scanner

UGC Approved Journal No. 49321
Shodh Drishti (An International Peer Reviewed Refereed Research Journal), Vol. 15, No. 8, August 2024
Impact Factor : 7.0
ISSN : 0976-6650

संत काव्य एवं उनकी परंपरा

मयंक तिवारी
शोध छात्र, हिंदी विभाग, पी०जी० कॉलेज, आजमगढ़

संत कवि अपनी सरलता, साधु स्वभाव तथा संत प्रवृत्ति के कारण आज प्रासंगिक है। संत कवियों में कबीर दास के अनुसार सच्चा संत वह होता है जो दुनिया के प्रपंचों से दूर केवलप्रभु की भक्ति में ही लीन रहता है। संत कवियों ने धर्मांधता,रूढ़ियों का अंधानुकरण, जातिगत भेदभाव, संप्रदायगत कट्टरता आदि विघटनकारी प्रभावो के प्रति विद्रोह किया

रचनाएं

सिख ग्रंथों के आदिग्रंथ में संत साधना का पद देखा जा सकता है, जो अर्जुन देव द्वारा संपादित है। इन पदों को अत्यंत पुनीत हार्दिक उद्‌गार दृष्टिगत होते हैं। इनके पद में इनके जीवन निर्माता एवं सहजता को देखा जा सकता है। इस पद के प्रारंभ में एक कथानक आया है। जिसमें एक कास्तकार केपुत्र को यह ज्ञात होता है कि राजा की पुत्री का विवाह भगवान विष्णु से होना सुनिश्चित है, तो वह स्वयं को नारायण के स्वरूप में ढालने और सुसज्जित खाने की चेष्टा करता है। विष्णु के सभी श्रृंगार व शास्त्र से सुसज्जित होने के पश्चात देखा जाता है की लड़की के पिता पर किसी शत्रु ने हमला कर दिया है और लड़की जब छद्म वेशधारी विष्णु से सहयोग की अपेक्षा करती है तो अर्थ के मारे उसके शांत शिथिल हो जाते हैं और वह नारायण के शरणागत हो जाता है। अंततः विष्णु कन्या के पिता और नकली वेशधारी की भी सहायता करते हैं।

संत संतगाथा नामक संग्रह के छः पदों को पाया जा सकता है, जो प्रत्यक्ष रूप से साधना के ही हैं। जिसमें उनकी भक्ति व साधना को कृष्णा के अवतार के रूप में अनुमान कर सकते हैं। किन पदों की भाषा में अरबी फारसी के भी पद चिन्ह प्राप्त होते हैं, किंतु इन पदों के वाक्यों, शब्दों में वह भाव चेतना और गंभीरता परिलक्षित नहीं होती जो साधना को पूर्णरूपेण परिभाषित करें।

डॉक्टर ग्रियर्शन ने संत साधना के नाम पर प्रचलित किसी साधना पंथ की चर्चा करने का प्रयत्न किए हैं और उनके मातानुयायियो के बनारस में स्थित होने के बारे में भी बताया है। किंतु बनारस में इस प्रकार के लोगो के बारे में कोई ठोस प्रमाण नहीं है। डॉव ग्रियर्शन के अनुसार साधना का काल खण्ड 17वीं ई०पू० बताया है।

संत वेणी

संत वेणी जी के कालावधि एवम् जीवन के अन्य कितने भी प्रसंग एवं घटनाओं के संदर्भ में तथ्य अ पर्याप्त है। अर्जुन देव को सिक्खों के पांचवे गुरु थे (सं0 1620–1663) ने इसका नाम अपने एक पद में वर्णित किया है–

वेणी कऊ गुरि कांड प्रगासु, रेमन तभी होही दासू।

–(गुरु ग्रंथ साहिब, रागबसंतु महत्ता–5, पृष्ठ 1192)

यह भी जानकारी प्रदान करते हैं कि सद्‌गुरु की महिमा से इनका और अलौकिक होता है। इनके तीन पदों का संकलन उक्त गुरुद्वारा संपादित (आदि ग्रंथ) में प्राप्त होता है, जिनमे इनके कुछ वैचारिक लगाव स्पष्ट देखे जा सकते हैं। उनकी रचनाओं में इनकी काव्य शैली बहुत प्राचीन प्रतीत होती है और इस बात से यह ज्ञात किया जा सकता है कि यह रामदेव के समकालीन तथा पंजाब प्रांत के दक्षिण पूर्वी अथवा राजस्थान के पूर्वोत्तर के रहने वाले लगते हैं। यद्यपि इनके जन्म स्थल व कर्मस्थल की स्पष्ट जानकारी प्राप्त नहीं होती। यह कब कहा जाता है कि इनके प्रदेश में नाथ योगी संप्रदाय के बीज दृष्टिगोचर होता है। प्राप्त पाठ्य सामग्रियों के आधार पर मात्र यहीं अनुमान लगाना सहज होगा कि 14वीं विक्रमी सदी में विद्यमान थे।व नाथ मत का इन पर प्रबल प्रभाव था।

रचनाएं

सत द्वारा संकलित "आदिग्रंथ"में विद्यमान तीन ऐसे पद हैं। जिसमें से इन पाखंडियों को लक्षित का उनकी भर्त्सना करता है, जो प्रातः स्नानादि उपरांत चंदन की मालवाड़ करके शिला पूजन करते हैं परंतु पक्ष से अत्यंत क्रूर है बगुले के भाती वे दूसरे के धन–धान्य को चुराने या गमन करने की रणनीतिक

Scanned with OKEN Scanner

गतिविधियों में संलग्न रहते हैं। उनके विचार का मूल्य है कि अनुभूति ना हो तब तक समस्त आचरण व्यर्थ है।

अन्य दूसरे पद में योग साधना की चर्चा है, तथा एक और वाक्य में तीनों नाडियो का चर्चा है जो क्रमशः इड़ा, पिंगलावा, सुषम्ना। उक्त नाडियो के संगम स्थल को त्रिवेणी से संबोधित किया गया है जिसे प्रयाग की त्रिवेणी भी कहा जाता है जहां 'निरंजन' अर्थात राम का वास है।

उन्होंने ऐसे मनुष्य के बारे में निंदा की है, जो राम को विस्मृत कर लौकिक माया में डूबे रहते हैं। तथा इनके द्वारा राम की आराधना करने जीवन मुक्ति की संजीवनी का मार्ग सुझाया है। मृत्यु के पश्चात मुक्ति को संत त्रेणी तथा जीवन मुक्त को आधार बनाकर इसे मनुष्य के लिए अपेक्षित बनाते हैं।

कश्मीर से इनका संबंध पाया जाता है, यही उनके निवास था। स्थानीय रूप से निम्नवर्गीय परिवार में इनका जन्म हुआ, देढ़ता मेहतर जाति में। किंतु इनके विचार और आचरण सदैव उच्च और अनुकरणीय रहे।

इनके संदर्भ में यह ज्ञात होता है कि यह शैव मातानुयायी थी एवं घूमने वाली कोटी की भगिनी थी। धर्म विषय द्वंद से सदैव दूर रहने में ही इन्हें सार्थकता का बोध होता है, इसके, विपरीत में सहज एवं समन्वयवादी व्यवस्था एवं व्यवहार से साम्य रखती हैं। सहज होगा कि चौदहवीं विक्रम सदी में विद्यमान थे व नाथ मत का इन पर प्रबल भी ई० शताब्दी। इनके विषय में यह सुनने को प्राप्त होता हैं कि यह अपनी दीर्घ जीवन काल तक सक्रिय एवं वृद्धावस्था तक स्वस्थ रही, इन्होंने अपने ज्ञान व विचारों के प्रसार के लिए कवि रचनाओं को मूर्त रूप भी दिया। सहज होगा कि 14वीं विक्रमी सदी में विद्यमान थे व नाथ मत का इन पर प्रबल प्रभाव हो सकता है——

'कहत नामदेव सुनहु त्रिलोचन'
(गुरु ग्रंथ साहिब, रागु पृष्ठ 847)

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. गुरू ग्रन्थि साहिब, राम गुरू, पृष्ठ 964
2. नाम देव गाथा
3. भक्ति सुधा, बिन्दु स्वाद (रूपकलाजी संस्मरण)
4. श्याम सुन्दर दास, कबीर ग्रन्थावली

इण्टरनेट एवं वेबसाइट

1. shodhganga@intlibnet
2. www.wikipedia.org
3. https://www.google.com

Scanned with OKEN Scanner

६	सामाजिक न्याय और पिछड़ा वर्ग आयोग **डॉ0 सरफराज खान**	66-68
६	कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और उसके सामाजिक प्रभाव : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन **शिखा गिरि**	69-74
६	एल0जी0बी0टी0क्यू0 समुदाय के अधिकारों की लड़ाई : भारत में वैधानिक संघर्ष और प्रगति **हर्षित कुमार**	75-82
६	आगरा महानगर के ख्याति प्राप्त कथक नृत्याचार्य स्व0 श्री मोंटू गिरी जी का सांगीतिक योगदान **रचना जिंदल एवं प्रो0 नीलू शर्मा**	83-85
६	महाभारत के आदिपर्व में वर्णित राजधर्म **डॉ0 कुमारी प्रियंका शर्मा**	86-88
६	बिहार में विचाराधीन कैदियों द्वारा शराब और नारकोटिक्स ड्रग से संबंधित अधिनियमों के उल्लंघन की व्यापकता पर शराबबंदी का क्या प्रभाव है–एक बारह वर्षीय (2010–2021) तुलनात्मक क्रॉस–सेक्शनल अध्ययन **मो॰ शरीफ आलम एवं डॉ॰ अजय कुमार**	89-94
६	भावनात्मक बुद्धिमत्ता की मध्यस्थ भूमिका के साथ पालन–पोषण शैलियाँ और खुशी के बीच सम्बन्ध **संध्या कुमारी एवं डॉ॰ अजय कुमार**	95-101
६	सकारात्मक मनोविज्ञान और इंटरनेट : मानसिक स्वास्थ्य का एक अवसर **सोनी कुमारी एवं डॉ॰ अजय कुमार**	102-108
६	विजयनगर साम्राज्य की सांस्कृतिक धरोहर : संगीत, नृत्य और साहित्य **डॉ0 दीक्षिता अजवानी**	109-112
६	उच्च माध्यमिक स्तरीय शिक्षकों में निम्न एवं उच्च जीवन–संतुष्टि के संदर्भ में शिक्षक हिमीकरण का अध्ययन **डॉ0 सपना शर्मा एवं उमा शर्मा**	113-123
६	शिक्षा की दृष्टि समकालीन परिदृश्य में दृश्य कलाओं का अध्ययन एवं अध्यापन **कृष्ण कुमार एवं सिद्धार्थ त्रिपाठी**	124-126
६	शिवमूर्ति की कहानियों में मुखर स्त्री आख्यान **सिमरन भारती**	127-130
६	संत काव्य एवं उनकी परंपरा **मयंक तिवारी**	131-132
६	21वीं सदी में भारत–नेपाल संबंध : चुनौतियां एवं संभावनाएं : एक विशेष अध्ययन **श्रीमती सस्मिता बरगाह एवं डॉ0 श्रीमती नाज बेंजामिन**	133-140
६	महिलाओं में कौशल विकास के प्रति जागरूकता एवं शासकीय कार्यक्रमों की भूमिकाओं के विश्लेषण का अध्ययन **दुर्गा न्याहाले**	141-144

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रमणिका

✎	शंखध्वनिक मैथिली साहित्यमे महत्व : एक अवलोकन **डॉ० कुमारी संध्या**	1-2
✎	समसामयिक परिदृश्य में योगवासिष्ठ का पुरुषार्थवाद **डॉ० दीप्ति वाजपेयी एवं अनामिका**	3-6
✎	जयप्रकाश नारायण और सम्पूर्ण क्रांति **रिंकी देवी मौर्या एवं डॉ० प्रार्थना सिंह**	7-11
✎	पर्यटन : उद्यमिता एवं शांति का उद्योग **जय सिंह यादव**	12-16
✎	प्रेमचन्द की कहानियों का सामाजिक यथार्थवाद : एक सूक्ष्म अध्ययन **डॉ० बालमुकुन्द यादव**	17-20
✎	आर्ष काव्यों में संस्कृति **डॉ० कुसुम कुमारी**	21-22
✎	सृष्टिविषये वैदिकचिन्तनम् **डॉ० विमल चन्द्र काण्डपाल**	23-25
✎	दिनकर के गद्य साहित्य में राष्ट्रीय चेतना का स्वरूप **प्रतिमा सिंह**	26-28
✎	सती प्रथा : कार्यान्वयन से उन्मूलन तक की यात्रा **साक्षी सिंह**	29-32
✎	पद्मश्री लोकवेत्ता डॉ० भगवतीलाल राजपुरोहित **मीनाक्षी टिकावत**	33-36
✎	रामायन कथा और वाल्मीकि रामायण में प्रमुख प्रसंग **डॉ० चन्दन**	37-41
✎	भारतीय सामाजिक संरचना और दलित समस्या **श्रीमती नीता आर्या**	42-44
✎	मधुकर सिंह के कथा–साहित्य में दलित चेतना **शालिनी**	45-50
✎	भारत की सामाजिक समस्या और राष्ट्रपिता महात्मा ज्योतिबा फुले **वीरेन्द्र कुमार गौतम**	51-54
✎	पश्चिमोत्तर भारत के बौद्ध केन्द्र : एक अध्ययन **डॉ० प्रदीप सिंह एवं डॉ० आदित्य सिंह**	55-58
✎	मेघदूतम् में विप्रलम्भ श्रृंगार : एक विवेचन **डॉ० संजय कुमार**	59-62
✎	मानव उत्पत्ति एवं शिक्षा का विकास **डॉ० रामकुमार प्रसाद**	63-65

Scanned with OKEN Scanner